तीसरी दुनिया के चौथे स्तंभ थे महेन्द्रभाई

दुनिया के बहुसंख्यक वंचितों, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं आदि के हक में आवाज उठाने को आजकल 'विकल्प" कहा जाता है और इन तबकों के तीखे संघर्ष और निर्माण की कहानियां 'वैकल्पिक मीडिया' मानी जाती हैं। विनोबा के आग्रह पर शुरू हुई 'सर्वोदय प्रेस सर्विस' इसी वैकल्पिक मीडिया की मुख्य वाहक रही है। जल, जंगल, ज़मीन, विस्थापन, रोज़गार, बड़े बांध, पर्यावरण, गैर-बराबरी, औरतों की दोयम दर्जे की हैसियत आदि मुद्दों पर हर हफ्ते देश भर के लगभग दो-ढाई सौ अखबारों, पत्रिकाओं तथा संस्थाओं को उपयोगी सामग्री पहुंचाने का दुरुह काम एक मामूली-सी टेबल से कर पाना 'सप्रेस' के सम्पादक श्री महेन्द्रकुमार का ही कमाल रहा है। पिछले लगभग साढ़े चार दशकों में मीडिया में तरह-तरह के बदलाव आए, लेकिन सप्रेस गांधी विचार को आधार बनाकर लगातार अपने काम में लगी रही।

सन 1960 में 'सर्वोदय नगर' का मिशन लेकर इन्दौर आए विनोबा भावे की चिन्ता थी कि सर्वोदय का मंच तो बना है लेकिन कोई प्रेस नहीं है। उस दौर में जयप्रकाश नारायण की अपील पर अपनी एम.ए. की पढ़ाई बीच में छोड़कर भूदान के काम में लगे निमाड़ के गांव लोनारा के एक आदर्शवादी युवक महेन्द्रकुमार ने गांधी विचार की प्रेस खड़ी करने की ज़िम्मेदारी उठाई और विनोबा से मात्र एक रुपए की सहयोग राशि लेकर सप्रेस की शुरुआत हुई। बिना मांगे मिले इस एक रुपए की परम्परा महेन्द्रभाई ने जीवन भर निभाई। सप्रेस में घोर आर्थिक तंगी के कई मौके आए लेकिन इसके सम्पादक ने न तो कभी कोई आवेदन किया और न ही सहायता की अपील। गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जीवन निर्वाह के लिए उन्हें आजीवन कार्यकर्ता बनाया और देश भर में फैले असंख्य मित्रों, सहयोगियों ने स्वप्रेरणा से यदा-कदा सप्रेस को सहायता दी।

मूल्यों का कड़ाई से पालन करने वालों में आ जाने वाली कड़वाहट से कोसों दूर महेन्द्रभाई में अद्‌भुत प्रत्युत्पन्नमति यानी विट थी। महेन्द्र भाई ने सिद्धांतों को लेकर कभी कोई समझौता नहीं किया। अपने इसी आग्रह के चलते आपात काल में उन्होंने कुछ महीनों की जेल यात्रा भी की। वे जीवनभर खुद के बनाए सूत के कपड़े वापरते रहे लेकिन ऐसा दूसरे भी करें इसका उन्होंने दुराग्रह नहीं पाला। इसीलिए वे सदा, सभी के मित्र बने रहे और यह मित्रता इस हद तक रही कि जब वे जेल गए तो इन्दौर में नईदुनिया के तत्कालीन सम्पादक श्री राजेन्द्र माथुर ने सप्रेस बुलेटिन के महत्व को समझकर उसे निकालने की ज़िम्मेदारी निभाई। इन्दौर और देश भर में फैले ठेठ वामपंथियों से लेकर दक्षिणपंथियों तक में उनके मित्रों का होना इसी की एक बानगी है। अनेक उदाहरण हैं जब गांधी विचार के आलोचकों तक से आपने सप्रेस के लिए लिखवाया। आदिवासी मुक्ति संगठन की केन्द्रीय समिति हो या फिर तरुण शांति सेना के शिविर, युवाओं के बीच इसीलिए वे साग्रह बुलाए और सादर सुने, माने जाते रहे। एक बुजुर्ग की युवाओं के साथ घनिष्ठ मित्रता और सार्थक संवाद महेन्द्रभाई की पहचान बन गए थे।

महेन्द्रभाई से फुर्सत में सुने गए विनोबा के साथ के अनेक संस्मरणों में एक मशहूर था जब विनोबा ने इन्दौर में साहित्य बिक्री के लिए पहले से आए कार्यकर्ता से उसका हिसाब-किताब मांगा था और उसके पैसे-धेले के जमा खर्च को अलग रखकर पूछा था कि इन्दौर में तुमने कितने घर बनाए? सामाजिक कार्यकर्ताओं से महेन्द्रभाई का भी यह सवाल रहा कि तुमने अपने कार्यक्षेत्र में कितने ऐसे घर बनाए हैं जहां कभी भी, कैसे भी जाने पर तुम्हारा स्वागत ही हो। खुद महेन्द्रभाई इसमें माहिर थे और इसीलिए देशभर में उनके

असंख्य ऐसे घर थे जहां, जब भी वे जाते उनका परिवार के एक वरिष्ठ सदस्य की तरह हमेशा स्वागत ही होता था। उनकी मृत्यु पर हुई शोकसभा में गांधी शांति प्रतिष्ठान के अनुपम मिश्र ने ठीक ही कहा था कि महेन्द्रभाई सर्वोदय प्रेस ही नहीं प्रेम सर्विस चलाते थे।

महेन्द्रभाई सभी से हमेशा कहते थे कि किसी काम को अपने बच्चे की तरह पालना-पोसना पड़ता है। चालीस से ज़्यादा सालों की प्रौढ़ सप्रेस महेन्द्रभाई के लिए हमेशा ऐसी बच्ची ही रही, जिसकी चिन्ता में हज़ार काम छोड़कर भी वे वापस इन्दौर लौटते रहे। सम्पादक की ऐसी लगन सप्रेस की जीवनशक्ति बनी रही।

विपन्न तबकों और उनकी आवाज के प्रति घोषित तरफदारी के बावजूद महेन्द्रभाई कभी भावुकता में नहीं बहे। तवा बांध में विस्थापितों के मछली पर अधिकार के प्रश्न हों या वनों पर आदिवासियों का कथित अतिक्रमण, साम्प्रदायिकता हो या फिर भू-मण्डलीकरण, महेन्द्रभाई का पक्ष हमेशा ही तार्किक और गांधी विचार पर आधारित रहता था। इसके चलते कई बार उन्हें अपने निजी मित्रों से भी उलझना पड़ता था।

एक सक्षम सम्पादक की तरह उनको सप्रेस में प्रकाशित होने वाले लेखों, खबरों की विश्वसनीयता का बहुत ध्यान रहता था। यह लगभग असंभव ही था कि किसी लेख की कोई जानकारी प्रामाणिक न हो या मामूली हिज्जे भी गलत चले जाएं। उनका मानना था कि प्रेस खबरों के अलावा समाज को एक भरोसा भी देती है। उस भरोसे को बनाए रखने के लिए प्रकाशित सामग्री में किसी तरह की ढील नहीं होनी चाहिए।

अहिंसा, न्याय और सामाजिक बराबरी के प्रति अपनी जगजाहिर प्रतिबद्धता के चलते उन्होंने सप्रेस के ज़रिए ऐसी ही सामग्री दी जो राजसत्ता से भिन्न नज़रिए से दुनिया को देखने, समझने का तरीका बताती थी। दरअसल उनके लिए मीडिया सिर्फ खबरें देने भर का साधन नहीं था बल्कि मीडिया की एक शैक्षणिक भूमिका भी थी। समाज में कार्यरत अनेक संस्थाओं, संगठनों से इसीलिए सप्रेस का नाता बना रहा।

व्यस्तता, संसाधनों की कमी और अरुचि के चलते आजकल मीडिया में किसी मुद्दे के बारे में लिखने और उसे समर्थन देने के पहले उसकी पड़ताल करने का चलन नहीं बचा है। महेन्द्रभाई उन संगठनों, सक्रिय समूहों और संस्थाओं को देखने, परखने का हमेशा समय निकाल लेते थे, जिनके मुद्दों, आंदोलनों से उनका कोई सरोकार रहता था। पिछले साल ही अपनी इस ललक के चलते वे बड़वानी ज़िले के सुदूर अंचल पाटी में सक्रिय जागृत आदिवासी संगठन की पहल पर आदिवासियों द्वारा बनाए जा रहे मिट्टी के बांधों को देखने और बनाने वालों से मिलने गए थे। अक्सर ऐसा होता था कि जिन मुद्दों में उनकी दिलचस्पी रहती थी वे उन मुद्दों को उठाने वाले व्यक्तियों, संगठनों के मीडिया प्रमुख हो जाते थे। सप्रेस इसी तरह देश भर के उन संगठनों की आवाज़ का वाहक बन गया था। नर्मदा बचाओ आंदोलन की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति और पहचान का आधार सप्रेस की छोटी सी टेबल और एक पुराना टाइपराइटर ही रहा है। पत्रकार और लेखक क्लॉड अल्वॉरिस ने अपनी सप्रेस यात्रा के दौरान इस पर आश्चर्य व्यक्त किया था और खुद के लिए ऐसे आदर्श की कल्पना भी की थी।

सप्रेस के कारगर होने में लेखकों से सम्पादक के रिश्तों ने भी एक बड़ी भूमिका निभाई है। महेन्द्रभाई अपने लेखकों से लगातार संवाद बनाए रखने के लिए सदा उत्सुक रहते थे।

गांव-देहातों में कई लोग स्थानीय समस्याओं और दुनिया-जहान पर गंभीरता से सोचते, कहते रहते हैं लेकिन उसे लिख पाना कठिन होता है। सप्रेस ऐसे अपरिपक्व लेखकों के लिए एक पाठशाला सरीखा होता था। आज के कई प्रतिष्ठित लेखकों, पत्रकारों का बुनियादी प्रशिक्षण इसी तरह सप्रेस में लिखते और अपनी गलतियों को सुधारते हुए हुआ है। महेन्द्रभाई खुद ऐसे कच्चे लेखकों के लेखों की गलतियां बताकर वापस भेजा और सुधारकर मंगाया करते थे। नए और महत्वपूर्ण विषयों पर लिखने के लिए सुझाना और फिर ठीक-ठाक करके प्रकाशित करना सप्रेस का ज़रूरी काम हुआ करता था। अंग्रेज़ी और दूसरी भाषाओं के कई लेखकों, विचारकों से हिन्दी में लिखने का आग्रह और यदि असंभव हो तो अनुवाद करवाकर प्रकाशित करना महेन्द्रभाई की खूबी थी।

लोकतंत्र में मीडिया परिभाषा से व्यवस्था का आलोचक, समीक्षक होता है और महेन्द्रभाई ने अपने जीवन में सप्रेस के ज़रिए इस परिभाषा को हमेशा सार्थक किया। तीसरी दुनिया के चौथे स्तंभ का ऐसा ध्वजधारी अब हमारे बीच नहीं है। क्या मीडिया जगत में उनकी जगह कोई भर पाएगा?

● राकेश दीवान